## संपादकीय

### इसरो की कामयाबी, अंतरिक्ष से खेत-खलिहान, सीमा की निगहबानी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने अपनी पहले जियोसिंक्रोनस इमेजिंग सैटेलाइट का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण कर उसे पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया है। इसे इसरो की बड़ी कामयाबी माना जा रहा है कि क्योंकि यह इमेजिंग उपग्रह देश के किसी भी क्षेत्र के रियल-टाइम चित्र दे सकेगा। जो समुद्री सुरक्षा, सीमाओं की निगरानी, राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी मूल्यवान जानकारी तो देगा ही, साथ ही पर्यावरण की निगरानी भी करेगा। इसके अलावा फसलों की स्थिति, मिट्टी की नमी व वनस्पति की सेहत की जानकारी देकर खेत-खलिहानों के लिये भी बेहद लाभकारी सिद्ध होगा। साथ ही उपग्रह आपदा प्रबंधन के लिये जरूरी जानकारियां उपलब्ध करायेगा। मसलन, बाढ़ प्रभावित इलाकों की स्थिति में पानी की स्थिति की सटीक जानकारी से आपदा राहत कार्य बेहतर ढंग से चलाने में मदद मिल सकेगी। निस्संदेह, इसके प्रक्षेपण से देश की धरती की निगरानी क्षमता में आशातीत वृद्धि होगी। साथ ही धरती पर होने वाले असामान्य बदलावों पर समय रहते नजर रखी जा सकेगी। इसरो द्वारा जीएसएलवी-एफ 17 राकेट के जरिये किया गया यह सफल प्रक्षेपण वैज्ञानिकों को उत्साहित कर गया क्योंकि यह जियोसिंक्रोनस कक्षा से इमेजिंग करने वाला देश का पहला सैटेलाइट है। दरअसल, इस कक्षा में काम करने वाले उपग्रह का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि यह लक्षित बड़े क्षेत्र पर लगातार निगरानी करते हुए मौजूदा समय के फोटोग्राफ लगातार दे सकता है। जिससे मौसम, पर्यावरण, आपदा प्रबंधन व भूमि की सतह में होने वाली बदलावों के निहितार्थों को समझना आसान हो सकेगा। दरअसल, इस उपग्रह का लाभ अंतरिक्ष अनुसंधान व सामरिक लक्ष्यों तक ही सीमित नहीं रहेगा, यह खेती व किसानों के लिये भी उतना ही महत्वपूर्ण साबित होगा। इससे मिलने वाले डेटा का प्रयोग हमारे भू-भाग पर उपलब्ध संसाधनों की निगरानी व उसकी प्रकृति में आ रहे बदलावों को समझने में भी मददगार होगा। दावा है कि उपग्रह से मिलने वाले चित्रों के विश्लेषण से फसलों की गुणवत्ता, प्राकृतिक प्रभावों के अलावा मिट्टी की गुणवत्ता की जानकारी जुटाने में सहायता मिल सकेगी। आंकड़ों के वैज्ञानिक विश्लेषण व इस कार्य में लगी सरकारी एजेंसियों की मदद से खेती से जुड़ी नीतियों के निर्धारण, प्रभावी योजनाओं को बनाने और क्रियान्वयन में सहायता मिलेगी। महत्वपूर्ण बात यह भी कि देश के विभिन्न भागों में आने वाले चक्रवात, बाढ़, जंगलों में लगने वाली आग तथा कुदरती रौद्र के दौरान जहां रियल टाइम जानकारी मिल सकेगी, वहीं बचाव व राहत के नीति निर्धारण में भी समय रहते मददगार होगी। दरअसल, धरती की निगहबानी करने वाले उपग्रह प्रभावित क्षेत्रों के चित्र व आंकड़े तुरंत उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाते हैं, जो राहत-बचाव कार्यों में जुटी एजेंसियों के लिये मार्गदर्शक होते हैं। निस्संदेह, आज देश का स्पेस सेक्टर नई ऊंचाइयों की ओर उन्मुख है। देश में 450 से अधिक स्पेस स्टार्टअप्स की मौजूदगी इस बात का प्रमाण है। देश की निजी कंपनियां भी ऑर्बिट तक रॉकेट पहुंचाने लगी हैं।

**विनोद शर्मा, संपादक**

# ग्यारह मौतें, ग्यारह सवालः आखिर जागता कब है शासन?

**[नकली बोतल, असली मौत और सोया हुआ सिस्टम]**
**[जहर बेचने वाले ही दोषी नहीं, रोकने वाले भी सवालों में]**

**प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'**

मध्य प्रदेश के सागर की यह घटना बताती है कि अवैध शराब का कारोबार किसी एक गांव या व्यक्ति तक सीमित नहीं। यदि सीमा पार से नकली बोतलें और जहरीला तरल लगातार पहुंच रहा है, तो स्थानीय ही नहीं, अंतरराज्यीय स्तर पर भी निगरानी जरूरी है। छोटे विक्रेता को पकड़ लेना पर्याप्त नहीं; उस पूरी आपूर्ति-श्रृंखला तक पहुंचना होगा, जहां नकली लेबल छपते हैं, कोड बनते हैं, जहरीली शराब तैयार होती है और फिर गांवों तक पहुंचती है। असली जांच यह भी पूछे कि यह नेटवर्क इतने समय तक चलता कैसे रहा। प्रशासन की जिम्मेदारी केवल अपराधी पकड़ना नहीं, उस रास्ते को बंद करना भी है, जिससे अपराध बार-बार लौटता है। अब उस पुराने सरकारी नाटक को खत्म करने की जरूरत है, जिसमें हादसे के बाद निलंबन, गिरफ्तारी, जांच, मुआवजा और आश्वासन का दौर चलता है और कुछ समय बाद सब शांत हो जाता है। सुरक्षित आजीविका, सतत निगरानी, नकली शराब के स्रोत पर प्रहार, गांवों में जागरूकता, तत्पर स्वास्थ्य सेवाएं और प्रभावी सामाजिक हस्तक्षेप–इन सब पर एक साथ काम करना होगा। गरीब से केवल यह कहना कि जहरीली शराब मत पीओ, पर्याप्त नहीं; उसे ऐसा सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन देना होगा, जिसमें सस्ता नशा उसकी मजबूरी न बने। वरना अगली त्रासदी में फिर वही कैमरे, वही बयान और वही आंसू होंगे।

मध्य प्रदेश के सागर की ग्यारह मौतों को आंकड़ा बना देना आसान है, उनसे सबक लेकर व्यवस्था बदलना कठिन। मगर असली परीक्षा यही है। यदि इन मौतों के बाद भी गिरफ्तारियों और मुआवजे को ही कार्रवाई मान लिया गया, तो मृतकों के साथ न्याय नहीं हुआ। जहरीली शराब की एक बोतल ने ग्यारह जानें लीं, लेकिन उसके पीछे खड़ी व्यवस्था की लापरवाही इससे बड़ी त्रासदी का रास्ता खोल सकती है। सवाल सिर्फ यह नहीं कि जहरीली शराब किसने बनाई; सवाल यह भी है कि उसे बनने, बिकने और गांवों तक पहुंचने से किसने नहीं रोका। सागर की धरती से उठता संदेश साफ है–गरीब की जान कोई आंकड़ा नहीं। शासन की जिम्मेदारी मौत के बाद शुरू नहीं, मौत से पहले पूरी होनी चाहिए।

मध्य प्रदेश के सागर की यह घटना बताती है कि अवैध शराब का कारोबार किसी एक गांव या व्यक्ति तक सीमित नहीं। यदि सीमा पार से नकली बोतलें और जहरीला तरल लगातार पहुंच रहा है, तो स्थानीय ही नहीं, अंतरराज्यीय स्तर पर भी निगरानी जरूरी है। छोटे विक्रेता को पकड़ लेना पर्याप्त नहीं; उस पूरी आपूर्ति-श्रृंखला तक पहुंचना होगा, जहां नकली लेबल छपते हैं, कोड बनते हैं, जहरीली शराब तैयार होती है और फिर गांवों तक पहुंचती है। असली जांच यह भी पूछे कि यह नेटवर्क इतने समय तक चलता कैसे रहा। प्रशासन की जिम्मेदारी केवल अपराधी पकड़ना नहीं, उस रास्ते को बंद करना भी है, जिससे अपराध बार-बार लौटता है। अब उस पुराने सरकारी नाटक को खत्म करने की जरूरत है, जिसमें हादसे के बाद निलंबन, गिरफ्तारी, जांच, मुआवजा और आश्वासन का दौर चलता है और कुछ समय बाद सब शांत हो जाता है।

मध्य प्रदेश के सागर की यह घटना बताती है कि अवैध शराब का कारोबार किसी एक गांव या व्यक्ति तक सीमित नहीं। यदि सीमा पार से नकली बोतलें और जहरीला तरल लगातार पहुंच रहा है, तो स्थानीय ही नहीं, अंतरराज्यीय स्तर पर भी निगरानी जरूरी है। छोटे विक्रेता को पकड़ लेना पर्याप्त नहीं; उस पूरी आपूर्ति-श्रृंखला तक पहुंचना होगा, जहां नकली लेबल छपते हैं, कोड बनते हैं, जहरीली शराब तैयार होती है और फिर गांवों तक पहुंचती है। असली जांच यह भी पूछे कि यह नेटवर्क इतने समय तक चलता कैसे रहा। प्रशासन की जिम्मेदारी केवल अपराधी पकड़ना नहीं, उस रास्ते को बंद करना भी है, जिससे अपराध बार-बार लौटता है।

अब उस पुराने सरकारी नाटक को खत्म करने की जरूरत है, जिसमें हादसे के बाद निलंबन, गिरफ्तारी, जांच, मुआवजा और आश्वासन का दौर चलता है और कुछ समय बाद सब शांत हो जाता है। सुरक्षित आजीविका, सतत निगरानी, नकली शराब के स्रोत पर प्रहार, गांवों में जागरूकता, तत्पर स्वास्थ्य सेवाएं और प्रभावी सामाजिक हस्तक्षेप–इन सब पर एक साथ काम करना होगा। गरीब से केवल यह कहना कि जहरीली शराब मत पीओ, पर्याप्त नहीं; उसे ऐसा सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन देना होगा, जिसमें सस्ता नशा उसकी मजबूरी न बने। वरना अगली त्रासदी में फिर वही कैमरे, वही बयान और वही आंसू होंगे।

सागर की ग्यारह मौतों को आंकड़ा बना देना आसान है, उनसे सबक लेकर व्यवस्था बदलना कठिन। मगर असली परीक्षा यही है। यदि इन मौतों के बाद भी गिरफ्तारियों और मुआवजे को ही कार्रवाई मान लिया गया, तो मृतकों के साथ न्याय नहीं हुआ। जहरीली शराब की एक बोतल ने ग्यारह जानें लीं, लेकिन उसके पीछे खड़ी व्यवस्था की लापरवाही इससे बड़ी त्रासदी का रास्ता खोल सकती है। सवाल सिर्फ यह नहीं कि जहरीली शराब किसने बनाई; सवाल यह भी है कि उसे बनने, बिकने और गांवों तक पहुंचने से किसने नहीं रोका। सागर की धरती से उठता संदेश साफ है–गरीब की जान कोई आंकड़ा नहीं। शासन की जिम्मेदारी मौत के बाद शुरू नहीं, मौत से पहले पूरी होनी चाहिए।

# दूसरों की चमकती जिंदगी में खुद को तलाशते बच्चे

**कृति आरके जैन**

बचपन कभी चीजों का हिसाब नहीं रखता था; अब उसे सिखाया जा रहा है कि उसकी पहचान भी चीजों से बनती है। किसके पास महँगा फोन है, किसके कपड़े बेहतर हैं, कौन कहाँ घूमकर आया, किसके घर में कैसी सुविधा है–तुलना की यह दौड़ बच्चों के मन तक पहुँच गई है। स्क्रीन पर हर ओर चमकता जीवन दिखाई देता है–महँगे फोन, कपड़े, कारें, यात्राएँ, पार्टियाँ, शानदार घर और मुस्कुराते चेहरे। धीरे-धीरे बच्चा मानने लगता है कि सुख वही है जो दूसरों के पास है और वह तभी महत्वपूर्ण है, जब उसके पास भी वैसा ही जीवन हो। यहीं से कमी वस्तुओं में नहीं, मन में पैदा होने लगती है। अब बच्चे अपने जीवन को अपनी आँखों से कम, दूसरों की दिखाई हुई जिंदगी से अधिक देखने लगे हैं। कभी तुलना पड़ोस तक थी, आज पूरी दुनिया उनके सामने है। सोशल मीडिया का अदृश्य आईना हर दूसरे व्यक्ति को अधिक सुंदर, सफल और खुश दिखाता है। फिर मन पूछता है– 'उसके पास यह है, मेरे पास क्यों नहीं?' माता-पिता की आर्थिक क्षमता जहाँ इच्छाओं की सीमा तय करती है, इंटरनेट वहाँ कोई सीमा नहीं छोड़ता। धीरे-धीरे किसी चीज का अभाव बच्चे को अपने भीतर का अभाव लगने लगता है; उसे लगता है कि वह पीछे है, कम है, अधूरा है। जबकि सच यह है कि बच्चे की कीमत उसके जूते, फोन, कपड़ों या घर की कीमत से नहीं आँकी जा सकती।

स्क्रीन की दुनिया बच्चे को केवल दृश्य नहीं देती, वह उसके मन के लिए नए पैमाने भी गढ़ती है। साइबर बुलिंग के ताने, उपहास और अपमान स्क्रीन पर खत्म नहीं होते; वे भीतर उतरकर आत्मविश्वास को चोट पहुँचाते हैं। फिल्टर और संपादित तस्वीरें चेहरे और शरीर की ऐसी कृत्रिम कसौटी बनाती हैं, जिस पर लड़के-लड़कियाँ अपने वास्तविक रूप को तौलने लगते हैं। ऑनलाइन गेमिंग और लगातार स्क्रीन से जुड़े रहना नींद, एकाग्रता और दिनचर्या को प्रभावित कर सकता है। आभासी दुनिया की जीत में डूबा बच्चा धीरे-धीरे उस वास्तविक दुनिया से दूर होने लगता है, जहाँ उसके रिश्ते, सपने और जीवन सचमुच मौजूद हैं।

एक बच्चे के भविष्य पर फैसला सुनाने के लिए हमने एक प्रश्नपत्र को इतनी ताकत दे दी है कि उसके सामने बचपन, सपने और संभावनाएँ छोटे पड़ने लगे हैं। कोचिंग की भीड़, रैंक की होड़, अंकों का दबाव और माता-पिता की अपेक्षाएँ असफलता को सामान्य पड़ाव नहीं, अंतिम फैसला बना देती हैं। कोटा जैसे शहरों की घटनाएँ इस संकट का कठोर चेहरा दिखाती हैं। हमें पूछना होगा–भविष्य की तैयारी के नाम पर कहीं हमने बच्चों का वर्तमान और बचपन तो नहीं छीन लिया? परीक्षा केवल योग्यता की कसौटी है, जिंदगी की नहीं। एक परिणाम किसी सपने की राह बदल सकता है, लेकिन किसी बच्चे की संभावनाओं पर पूर्णविराम नहीं लगा सकता।

घर में दरवाजे होते हैं, पर बच्चों के मन के दरवाजे धीरे-धीरे बंद हो जाएँ तो कोई आवाज सुनाई नहीं देती। माता-पिता काम में, बच्चे स्कूल और कोचिंग में–एक ही छत के नीचे रहते हुए भी सब अपनी-अपनी दुनिया में सिमटते जाते हैं। कभी परिवार साथ बैठकर खाना खाता और बातें करता था; अब कई बार संवाद संदेशों में रह गया है। माता-पिता पूछते हैं– 'क्या हुआ?' बच्चा कहता है– 'कुछ नहीं।' इस 'कुछ नहीं' को सुनना जरूरी है। बच्चों को हर बार समाधान नहीं चाहिए; कई बार उन्हें बस ऐसा अपना चाहिए, जो बिना टोके, बिना परखे उनकी बात सुन ले। उन्हें यह भरोसा चाहिए कि घर वह जगह है जहाँ वे सफलता ही नहीं, अपनी हार, डर और कमजोरी लेकर भी लौट सकते हैं। बच्चे के कंधों पर आज बस्ते के साथ आने वाले कल का डर भी है। एआई नौकरियाँ बदल देगा तो हमारा क्या होगा? बढ़ती महँगाई, जलवायु संकट और बदलती दुनिया के सवाल उनके मन में भय भर रहे हैं। इस डर में वे परिवार से दूर होने लगते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि बड़े उनकी दुनिया समझ नहीं सकते। यह दूरी टूटनी चाहिए। माता-पिता को हर सवाल का जवाब नहीं, बच्चे के पास बैठना जरूरी है। सलाह बाद में, पहले हाथ थामा जा सकता है। शिक्षक, अभिभावक और समाज बच्चे के व्यवहार में आए गंभीर बदलावों को अनदेखा न करें। जरूरत हो तो भरोसेमंद वयस्क या मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की मदद लेना कमजोरी नहीं, जिम्मेदारी है।

दूसरों की रोशनी में अपना चेहरा मत तलाशो। स्क्रीन पर दिखने वाली जिंदगी पूरी जिंदगी नहीं होती; वहाँ दिखाई देने वाली चमक तुम्हारी रोशनी कम नहीं करती।

### सीएम राइज स्कूल आनंद नगर में मिट्टी की गणपति प्रतिमा निर्माण कार्यशाला आयोजित

# लगभग 60 विद्यार्थियों ने लिया प्रशिक्षण, प्रतिमाओं में डाले गए तुलसी के बीज

**पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।**

आगामी गणेश उत्सव को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने के उद्देश्य से नगर पालिक निगम खंडवा द्वारा सीएम राइज स्कूल आनंद नगर में मिट्टी से गणपति प्रतिमा निर्माण संबंधी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में लगभग 60 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर मिट्टी से गणपति प्रतिमा बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को पर्यावरण अनुकूल मिट्टी की गणपति प्रतिमा तैयार करने की विधि बताई गई। विशेष रूप से तैयार की गई प्रतिमाओं में तुलसी के बीज भी डाले गए, ताकि गणेश उत्सव के पश्चात प्रतिमा के विसर्जन से पर्यावरण को नुकसान न हो तथा मिट्टी के साथ तुलसी के पौधे का भी विकास हो सके।यह प्रशिक्षण प्रशिक्षक रूपाली वाघ एवं नवीन परदेशी तथा आईईसी, नगर पालिक निगम खंडवा की टीम के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें मिट्टी से मूर्ति निर्माण एवं क्ले मॉडलिंग कला का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना रहा। प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी श्री संजय शुक्ला एवं जोन प्रभारी श्री भुवन श्रीमाली ने बताया कि आगामी गणेश उत्सव को पर्यावरण अनुकूल बनाने की दिशा में इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम समाजसेवी संस्थाओं एवं विद्यालयों के सहयोग से निरंतर आयोजित किए जाएंगे। इन प्रयासों से बच्चों एवं नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने के साथ ही उनमें क्ले मॉडलिंग जैसी रचनात्मक कला के प्रति रुचि एवं कौशल का विकास होगा। नगर निगम द्वारा नागरिकों से भी अपील की गई है कि आगामी गणेश उत्सव में मिट्टी से निर्मित पर्यावरण अनुकूल गणेश प्रतिमाओं को प्राथमिकता देकर पर्यावरण संरक्षण में सहभागी बनें।

# मिट्टी की प्रतिमाएं आस्था के साथ पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश देती हैं : महापौर श्रीमती अमृता अमर यादव

**पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।**

माता चौक क्षेत्र में विगत कई वर्षों से मिट्टी से श्री गणेश जी एवं श्री दुर्गा जी की आकर्षक एवं मनमोहक प्रतिमाओं का निर्माण कर रहे कोलकाता के कलाकार एवं मूर्तिकार श्री चीना पाल का आज महापौर श्रीमती अमृता अमर यादव ने आत्मीय स्वागत, अभिवादन एवं सम्मान किया।

इस अवसर पर महापौर श्रीमती अमृता अमर यादव ने श्री चीना पाल द्वारा निर्मित की जा रही आकर्षक मिट्टी की प्रतिमाओं की कलाकारी का अवलोकन किया तथा उनकी कला, मेहनत, लगन और पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पण की सराहना की। महापौर ने कहा कि मिट्टी की प्रतिमाओं का निर्माण हमारी आस्था एवं परंपराओं को सहेजने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक सराहनीय पहल है। प्राकृतिक मिट्टी से निर्मित प्रतिमाएं पर्यावरण हितैषी होती हैं और स्वच्छता एवं प्रकृति संरक्षण का सकारात्मक संदेश देती हैं। श्री चीना पाल विगत कई वर्षों से खंडवा में मिट्टी की प्रतिमाओं का निर्माण कर रहे हैं। उनकी कला में आस्था, संस्कृति, परंपरा और पर्यावरण संरक्षण का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। महापौर ने उनके इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए नागरिकों से भी पर्यावरण हितैषी मिट्टी की प्रतिमाओं को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष श्री रोहित मिश्रा, श्रीमती स्नेहा पाराशर, जिला मंत्री श्रीमती रोशनी गोलकर, प्रदेश मीडिया संयोजक श्रीमती हर्षा ठाकुर, पार्षद श्री ओमप्रकाश सिलावट, श्री सुभाष सैनी, श्री टीटू गौर, श्री विजय पवार, श्री आकाश यादव, श्री शशांक गुप्ता एवं श्री अभिषेक यादव उपस्थित रहे। आस्था भी, परंपरा भी और पर्यावरण संरक्षण भी–यही है स्वच्छ एवं सुंदर खंडवा का संकल्प।

# 'छात्रों की गूंज' से युवाओं में जगा संघर्ष और विश्वासः प्रतिभा रघुवंशी

### बड़ी संख्या में छात्र एवं युवाओं ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की, राहुल गांधी के नेतृत्व पर जताया भरोसा

**पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।**

कांग्रेस के 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के बाद युवाओं में पार्टी के प्रति बढ़ते उत्साह को लेकर कांग्रेस नेताओं ने कहा कि इस कार्यक्रम ने देश के युवाओं में विश्वास और संघर्ष की नई गूंज पैदा की है। इसी का परिणाम है कि बड़ी संख्या में छात्र, युवा और नौजवान कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। जिला कांग्रेस प्रवक्ता प्रेमांशु जैन ने कहा कि 'छात्रों की गूंज' के माध्यम से युवाओं को अपनी आवाज उठाने का मंच मिला है। आदरणीय राहुल गांधी के नेतृत्व में युवाओं के बीच राजनीति को लेकर एक नया विश्वास पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि सोमवार को गांधी भवन में बड़ी संख्या में युवा कांग्रेस से जुड़े है, क्योंकि वे रोजगार, शिक्षा और अपने भविष्य से जुड़े सवालों को मजबूती से उठाना चाहते हैं।

कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि एक ओर युवाओं को हर साल करोड़ों रोजगार देने के वादे किए गए थे, लेकिन दूसरी ओर देश की शिक्षा एवं भर्ती व्यवस्था सवालों के घेरे में है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक और परीक्षा व्यवस्था में अनियमितताओं से मेहनत करने वाले लाखों विद्यार्थियों का भविष्य प्रभावित हो रहा है।कांग्रेस नेताओं ने कहा कि युवा अब केवल आश्वासन नहीं, बल्कि रोजगार, पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया और बेहतर शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं। 'छात्रों की गूंज' से उठी आवाज आने वाले समय में देश की राजनीति की दिशा तय करेगी और बड़ी संख्या में युवा कांग्रेस से जुड़कर इस संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे। इस अवसर पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष (शहर)प्रतिभा रघुवंशी ने कहा कि ?छात्रों की गूंज से इस देश में युवाओं में एक विश्वास की गूंज उठी, इस देश के युवाओं में संघर्ष की एक गूंज उठी और उसी गूंज का परिणाम है कि आज बहुत बड़ी संख्या में कांग्रेस पार्टी में हमारे युवा नौजवान छात्र भाइयों ने और युवाओं ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। ये जो विश्वास हिंदुस्तान की राजनीति में आदरणीय राहुल गांधी जी के नेतृत्व में आया है, ये इस बात से आया है कि एक और वो लोग हैं जो युवा बेरोजगारों को 2 करोड़ रोजगार देने की बात करते थे, लेकिन शिक्षा व्यवस्था को इस लच्छर ढांचे में लाकर खड़ा कर दिया।

## गुरु रविदास जी के सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए निकल जा रही है कलश वंदन यात्रा

**पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।**

संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के पावन उपलक्ष्य में देशभर में समरसता संकल्प अभियान के तहत कलश वंदन यात्रा निकाली जा रही है। इन दोनों खंडवा जिले में कलश वंदन यात्रा अलग-अलग विधानसभा में पहुंच रही है। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि रविवार को कलश वंदन यात्रा खंडवा विधानसभा क्षेत्र के नागचुन ग्राम में पहुंची, क्षेत्र की विधायक कंचन मुकेश तंनवे एवं जिला अध्यक्ष राजपाल सिंह तोमर के साथ ग्राम वासियों ने कलश वंदन यात्रा का स्वागत अभिनंदन कर पूजन किया। इस अवसर पर विधायक कंचन तनवे ने कहा कि संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज ने समाज को समानता, समरसता, प्रेम और मानवता का संदेश दिया। उनके विचार सदैव हम सभी को सेवा, सद्भाव एवं सामाजिक समरसता के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। हम सभी उनके बताएं मार्ग पर चलकर धर्म संस्कृति से जोड़कर देश के विकास में सहभागी बने।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059